International Journal of Advanced Research and Development
ISSN: 2455-4030
Impact Factor: RJIF 5.24
www.advancedjournal.com
Volume 2; Issue 5; September 2017; Page No. 829-831

संगीत : धर्म के पूरक के रूप में

डॉ॰ ऋचा
सहायक प्राध्यापक (संगीत गायन), श्री लाल नाथ हिन्दू महाविद्यालय, रोहतक, हरियाणा, भारत।

शोध सारांश
संगीत ललित कलाओं में सर्वोत्तम है। यह एक ऐसी अमूर्त सौंदर्य की प्रतिष्ठा कराती है, जिसका प्रभाव विश्वव्यापी है। नाद ब्रह्म स्वरूप है। सृष्टि का आरम्भ अनाहत नाद से माना जाता है, जो ब्रहमांड व्यापी है। संगीत एक ऐसी दिव्य एवं अलौकिक शक्ति है, जिसके द्वारा ईश्वर को प्राप्त किया जा सकता है। संगीत आनंद की अनुभूति है एवं धर्म सत्य की उपलब्धि है। संगीत के अलावा ऐसी कोई भी कला नहीं है जो हमें ईश्वर के निकटतम ले जाए। धर्म चाहे कोई भी हो, ईश उपासना प्रत्येक धर्म का लक्ष्य है। प्रत्येक धर्म में मंत्रों, वाणियों, हदिसों, प्रवचनों, स्तुतियों में संगीत को स्थान मिला है। सभी धर्मो तथा सन्त महापुरुषों ने संगीत को परम पवित्र, कल्याणकारी तथा ईश्वर प्राप्ति का मुख्य साधन माना है। वैदिक काल में जहाँ संगीत को मोक्ष प्राप्ति का साधन माना जाता था, वहीं दूसरी और जनरंजन करना भी इसका उद्देश्य था। संगीत अपनी आध्यात्मिकता सहित आज भी मानव को शांति प्रदान करता है।

मूल शब्द : संगीत, धर्म, परमात्मा, संबंध।

प्रस्तावना
संसार में संगीत ही ऐसी वस्तु है, जो मनुष्य को ईश्वर की प्राप्ति में सहायता करती है। सुख–दुख की प्रयोगशाला में संगीत यंत्र द्वारा जब आत्मा को उपचार रूप पा लिया जाता है तब परमानन्द की स्थिति स्वयं आ जाती है। परमात्मा की प्राप्ति के लिए मानव का सर्वोच्चतम् साधन संगीत ही है। रवीन्द्र नाथ ठाकुर कहते हैं – ''प्राण और मन देकर भी मैं जिसके समीप नहीं जा सकता, गान के माध्यम से मैं उसी के चरण छू लेता हूँ।''[1] निः संदेह यह सत्य है कि स्वर कभी विलीन नहीं होते, अपितु वे शब्दातीत स्तुति की तरह निरन्तर चढ़ते हुए प्रभु के पावन चरणों तक पहुंचते हैं। प्रख्यात गायक पंडित जसराज के शब्दों में, ''संगीत एक उपासना पद्वति है उसके भीतर ही उसका आनन्द लिया जा सकता हैं। संगीत का रास्ता टेढ़ा है, किन्तु एक बार जिसने उसका आनन्द स्पर्श कर लिया उसका संपूर्ण जीवन भीतर से बदला जा सकता है।''[2] प्रख्यात गज़ल गायक गुलाम अली कहते हैं, कि कला उस परवरदीगार का पैगाम है, जिसे वो फनकारों को इसलिए बक्शता है कि वे उस पैगाम को ज्यादा से ज्यादा फैलाएं।

आध्यात्मिक शब्द और धर्म शब्द भी आपस में जुड़े हैं। प्राचीन ऋषि मुनि संगीत साधना से आध्यात्मिक विकास के द्वारा ही ईश्वर को प्राप्त किया करते थे। संगीत तो इस संसार का आकर्षण और परलोक की पतवार है, वह आध्यात्मिकता की सीढ़ी है। आध्यात्मिकता समग्र भारतीय जीवन दर्शन की मूल भित्ति रही है। परमतत्व के अनुसंधान की चेष्टा हमारे सभी प्रयासों को चिरकाल से निरन्तर अनुप्राणित करती रही है। आध्यात्मक के रंग में रंगकर हमारे मनीषी कलाकारों ने विश्व के प्रत्येक रूप में सर्वव्यापी दिव्यता का साक्षात्कार किया है। आध्यात्मिकता का यह पक्ष जितना हमें देवालयों में प्राप्त होता है, उतना अन्य कहीं नहीं मिलता। देवालयों में पूजा परिपाटी के अंतर्गत गीत, नृत्य का प्रचलन प्राचीन काल से प्रचलित है। चाहे उस का कोई भी रूप हो। मंदिरों में गायन–वादन की परम्परा आध्यात्मिकता से सराबोर है। यदि कहा जाए कि उस परम्परा में संगीत का आध्यात्म अवतरित हुआ है, तो अतिश्योक्ति न होगी। परम्परा के प्रति अटूट निष्ठा व आदरपूर्वक आग्रह निश्चय ही हमें भारतीय संगीत के निकट ले जाकर खड़ा कर देता है। भारतीय संगीत की आधारशिला आध्यात्मिक है। प्राचीन ग्रन्थों से पता चलता है कि संगीत हर काल, हर ग्रह में रहा है, यदि उत्पति की बात करें तो संगीत की उत्पत्ति देवताओं से मानी जाती है। संगीत सर्वप्रथम ब्रहमा जी के पास था। ब्रहमा जी ने यह कला शिव जी को दी, शिव ने यह कला सरस्वती जी को दी। यदि संगीत के प्राचीनतम् रूप पर दृष्टिपात करते हैं तो सर्वप्रथम वैदिक समय के संगीत को हम आध्यात्मिकता से सरोबार पाते हैं।

सांगीतिक उपासना का भाव विश्व को भरत के वैदिक युग से प्राप्त हुआ। सर्वप्रथम इसी युग में तथ्य पर विश्वास किया गया कि ईश्वर की सत्ता संगीत से पृथक नहीं है, यदि हम उसे रिझाना चाहते हैं, उस तक पहुँचना चाहते हैं तो संगीत के माध्यम को पकड़ लें। यही मधुर माध्यम हमें पृथ्वी से स्वर्ग के दिव्य प्रागंण में पहुँचा देगा। उत्तर वैदिक काल में रामायण और महाभारत की रचना प्रारम्भ हो गई थी। रामायण काल में संपूर्ण समाज पर संगीत की पावन एवं दिव्य आभा रही थी। इस समय में संगीत का आत्मिक सौंदर्य अधिक विकसित होने लगा था। भारतीय संगीत में लौकिकता, आध्यात्मिकता की दृष्टि से संगीत की उत्पत्ति नाद से हुई है। नाद का प्रभाव केवल मानव पर ही नहीं जड़ चेतन सभी पर पड़ता है। विषैला साँप भी बीन की मधुर धुन सुनकर अपनी सुधबुध खो बैठता है। कीट्स कहते हैं – कि जो ध्वनि कानों से सुनी जाती है, वह मधुर है और जो कानों से सुनी नहीं जाती वह और भी मधुर है।[3] भारतीय संगीत अति प्राचीन होने पर भी जीवित है। भारतीय कलाकारों ने संगीत को कभी साध्य नहीं माना। उन्होंने लक्ष्य प्राप्ति के लिए सदैव इसे साधन के रूप में माना है। वैदिक संगीत को दिव्य संगीत की उपमा दी गई है और भक्ति संगीत की तो कुछ न्यारी ही भंगिमा है।

भक्ति संगीत भक्त का परमात्मा तक पहुंचने का साधन है। संसार

में जब तक परमात्मा के प्रति सब का विश्वास है, तब तक यह भी रहेगा क्योंकि यह सीधा हृदय से निकलता है।[4] भक्ति के लिए कीर्तन सर्वोत्कृष्ट साधन है। भक्त कवि सूरदास ने सर्वप्रथम संगीत का सम्बंध जीवन से जोड़ा है। इनके गीतों में जीवन का सौंदर्य उभर कर मानव को मोहित करने लगा। कीर्तन में गाए जाने वाले संगीत को ही परमात्मा से जोड़ा गया। संगीत द्वारा सूक्ष्मति सूक्ष्म और पारदर्शी वर्णनी पर दृष्टिपात करें तो ऐसा प्रतीत होता है कि जन्मांध होते हुए भी सूर के पदों में जो विशेषता है वह अन्य काव्य कलाकारों में प्रतीत नहीं होती। प्रत्येक राग रागनी को लेकर उन्होंने रचना की है।

''जागिये गोपाल लाल आनन्द निधि नन्दलाल
जसुमति कहै बार–बार भोर भई प्यारे।।''[5]

धर्म जब तक संगीत का प्रेरक रहा है तब तक उसका प्रयोजन परमात्मा से सम्बंध स्थापित करता था। आज के युग में भारतीय संगीत विश्वव्यापी है, कहा जाता है कि जो भारतीय संगीत की गंगा में अवगाहन करते हैं उन्हें एक प्रकार की अपूर्व शांति का अनुभव होता है। संगीत साधना का परम स्वरूप भजन और कीर्तन ही है। संगीत की अमोघ शक्ति के आगे कौन नतमस्तक नहीं है। संगीत द्वारा ही परमात से सम्बंध स्थापित किया जा सकता है। संगीत से बढ़कर प्रभु को रिझाने वाली अन्य कोई वस्तु इस संसार में नहीं है। इसीलिए सभी भक्ति संगीत में रमें संगीतज्ञों ने भगवान को अपने इतने करीब पाया है। जैसे – स्वामी हरिदास, मीरा, जयदेव, सूरदास, तुलसीदास आदि।

1. **स्वामी हरिदास :–** वृन्दावन के स्वामी हरिदास जी संगीत शास्त्र के धुरन्धर आचार्य और गायक शिरोमणि के साथ अंग अभिनय नृत्य के भी ज्ञाता थे। नृत्य के सम्बंध में उनकी देन रास के रूप में विद्यमान है। यह सखी सम्प्रदाय के प्रवर्तक थे। स्वामी जी के सम्प्रदाय में गायन उपाना का एक अंग था।[6] स्वामी जी ने जिन–जिन रागों में रचानाएँ रची, वो हैं – विभास–4, आसावरी–7, बिलावल–1, कल्याण–6, केदार–22, कान्धरा–30, सारंग–11, मल्हार–8, गौड–2 आदि। संगीत की दृष्टि से स्वामी हरिदास जी की रचनाओं का एक विशेष अंग 'रासलीला' है। उन्होंने रासलीला को एक नई दिशा प्रदान की। आध्यात्म को संगीत के साथ जोड़कर जो उच्चता प्राप्त की है वह संगीत के विकास और उसकी अक्षुष्णता में अतुलनीय योगदान की पयार्यची है।
2. **मीरा :–** संगीत में जो योगदान मीरा का है, वह शायद ही किसी का हो। मीरा की सभी रचनायें गेय हैं। इनके पद गुजराती तथा राजस्थानी ब्रज भाषा में हैं। मीरा के पदों की कसौटी ही संगीत है। भावपूर्ण पदों मे संगीत का आयोजन कर उसे गाकर स्वरूप प्रदान करना, निःसंदेह संगीत के भंडार को समृद्ध करना है। उनके पदों में श्रोता और गायकों को भक्तिभाव से मंत्र–मुग्ध कर आत्मविभोर और आत्मविस्मृत करने की अपूर्व क्षमता है।[7] मीरा बाई के पद सोरठ राग में सबसे अधिक मिलते हैं, मल्हार राग में भी कुछ रचनाएं प्राप्त होती हैं। संगीत की दृष्टि में मीरा के पद जहां एक ओर तत्कालीन शास्त्रीय संगीत के आधार को ग्रहण करते हैं, वहीं अनेक पद कजरी, लावनी इत्यादि लोकगीतों की धुन पर भी रचे हैं।[8] संगीत की विकासशीलता में जो वाद्य प्रयोग किए जाते थे उनका वर्णन भी मीरा के पदों में मिलता है, जैसे चंग, मृदंग डफ, वेणु, मुरलिया, एकतारा आदि। पं॰ भातखण्डे जी ने मीरा के पदों को लिपिबद्ध किया है।

उदाहरण :–

म्हारा रसिया बालम
यो ने चाहे हो राज
दासी थारी जन्म – जन्म री
यें तो मा का सिरताल[9]

अतः हम कह सकते हैं कि मीरा के पद जितने मीरा के युग में गाये व प्रचार में थे उतने आज भी हैं।

3. **जयदेव :–** संगीत कला में निपुणता, वैष्णव, भावना का प्राबल्य, काव्य का चमत्कार, ये सभी गुण एक ही जगह कृष्ण भक्त कवि जयदेव के गीत–गोविंद में मिलेंगे। जयदेव सदैव जगन्नाथ भगवान की प्रतिमा के आगे गीत गाया करते थे। इस प्रकार गीत–गोविन्द के लिए सुंदर गीतों का संग्रह है। जयदेव ने राधाकृष्ण का मिलन आत्मा परमात का मिलन बताया है। उन्होंने राधा–कृष्ण के संयोग–वियोग को राग–रागनियों में बांधा, गीत गोविन्द में मालव गौड, बसन्त, देश बराटी, गौड श्री, भैरवी आदि राग–रागनियों एवं रूपक, निःसार, यति, एक ताल, अष्ट ताल आदि तालों का प्रयोग किया है। इस प्रकार काव्य से परिपूर्ण ये गीत भारतीय साहित्य तथा धर्म व संगीत को अपूर्व देन हैं।
4. **सूरदास –** सूरदास ने हरि लीला को गान का आधार देकर संगीत की महत्ता को द्विगणित किया। गीति शैली में विविध राग–रागनियों को ग्रहण किया। सूरसागर में बहुत से रागों का वर्णन मिलता है। जैसे – कान्हड़ा, बिलावल, मारू धनाषी, रामकली, नट सारंग, केदार, मल्हार, परज, बिहागड़ा, गौरा, बिहारा, कल्याण, भैरव, भोपाली, पूर्वी, पूरिया, काफी मालकौंस, श्री आदि।[10] संगीत के इस ज्ञान के कारण इन्हें अष्टछाप कवियों की श्रेणी में सर्वश्रेष्ठ सम्मान प्राप्त हुआ। इन्होंने कीर्तन को भी मर्यादित किया। उन्हें इस सम्प्रदाय में पहले गायक व बाद में कवि का स्थान मिला। सूर ने जहाँ अपने युग में प्रचलित राग रागनियों को अपने काव्य में स्थान दिया, वहीं उन्होंने ध्रुपद, ख्याल और पारस्परिक लोक संगीत की शैली को भी स्थान दिया। सूरदास के पदों में प्रयुक्त तालों में एक ताल, झपताल, ध्रुवताल आदि प्रमुख थे। सूरदास ने अपने पदों में राग नृत्य का भी वर्णन किया है। सूरदास ने कीर्तन का गान शास्त्रीय पद्धति से किया। सूरदास का संगीत, उनकी रचनाएं, आज भी संगीतज्ञ ठुमरी, ख़्याल, ध्रुवपद के रूप में गाते हैं। ब्रज संगीत का वर्तमान रूप मध्यकालीन भक्त कवि सूरदास की देन है।11
5. **तुलसीदास –** तुलसीदास जी ने तत्कालीन सभी पद्धतियों – चौपाई पद्धति, पदावली पद्धति, दोहा पद्धति में श्री राम का गुणगान किया है। महिला वर्ग के लिए उत्सव व संस्कारों वाले गीत, रसिकों के लिए कवितावली, सन्यासियों के लिए विनय पत्रिका और वैराग्य संदीपनी लोक गीत प्रेमियों के लिए दोहावली और गम्भीर साहित्यक व दार्शनिक रूचि और जनमानस के लिए रामचरितमानस ज्ञान की रचना तुलसीदास ने की।[12] विनय पत्रिका नामक ग्रंथ में 23 राग रागनियों का, गीतावली में 21 रागों का प्रयोग है। तुलसीदास की विनय पत्रिका के अधिकार पदकल्याण एवं विलास राग में हैं।

इस प्रकार सारे वर्णन यह प्रतीत करवाते हैं, कि विभिन्न प्रकार की गेय रचनाएं, वाद्यों, किन्नरों, गंधर्वों सांगीतिक जातियों, गेय विदयाओं का प्रयोग तुलसीदास जी ने अनुपम पदावली में किया है। अतः जितना व्यापक हिंदु शब्द है उतना ही व्यापक संगीत और

हिंद धर्म है। संगीत की विधि संपूर्ण हिंदू साहित्य को सींच रही है और हमेशा ऐसे ही पोषित करती रहेगी।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. संगीत कला विहार (मासिक पत्रिका), सितम्बर 1982, पृ॰ 280
2. वही
3. संगीत कला विहार, (मासिक पत्रिका) सितम्बर 1983, पृ॰ 281
4. www.bhaktisangeet.comwikipedia
5. सूरसागर, पद – 823
6. स्वामी हरिदास की जीवनी, प्रभुदयाल मित्तल, पृ.–26
7. मीरा की भक्ति और उसकी काव्य साधना का अनुशीलन, भगवान दास तिवारी, पृ.12
8. काव्य और संगीत का पारस्परिक संबंध, उमा मिश्र, पृ. 135
9. क्रमिक पुस्तक मलिका, भाग–3, पृ. 73
10. www.सूरदास/सूरसागर/wikipedia.com
11. भक्ति संगीत अंक, (मासिक पत्रिका) जनवरी 1970, पृ. 56
12. तुलसीदास : चित्रण व कला, इन्द्रनाथ मदान, पृ. 98